आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2523 • उदयपुर, रविवार 21 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दिव्यांगों के जीवन को सरल और सुचारु बनाएं

शारीरिक दृष्टि से अक्षम (दिव्यांग) व्यक्तियों के पुर्नवास एवं विकास को लेकर प्रतिवर्ष 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकलांग दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1992 से संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर हुई थी। भारत के प्रधानमंत्री ने इसे दिव्यांग दिवस का सम्बोधन प्रदान किया। इसका उद्देश्य दिव्यांगों के जीवन को बेहतर और स्वावलंबी बनाना है।

पूरी दुनिया के 15 प्रतिशत लोग विकलांगता से ग्रस्त है। जिन्हें रोजमर्रा की जिंदगी में अनेक कठिनाइयों का सामना करना और इनके समग्र विकास के साथ इनके अधिकारों की रक्षा करना है। निःशक्तजन से भेदभाव करने पर दो साल तक की कैद और अधिकतम 5 लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। जहां तक भारत का सवाल है यहां की आबादी का 2.2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांग है। भारत सरकार ने इनके विकास के लिए सरकारी नौकरियों व अन्य संस्थानों में 3 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान को बढ़ाकर 4 प्रतिशत कर दिया है। दिव्यांग शारीरिक दृष्टि से भले ही अक्षम हो लेकिन उनमें कुदरत कुछ ऐसी प्रतिभा का रोपण कर देती है जिससे वे दुनियाभर में अपने कौशल का योगदान सुनिश्चित कर प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं। ऐसे कुछ व्यक्तियों में गायक और संगीतकार रवीन्द्र जैन, नृत्यांगना सोनल मानसिंह, नृत्यांगना सुधाचंद्रन, पहली एवरेस्ट विजेता दिव्यांग महिला अरुणिमा सिन्हा, क्रिकेटर एस चंद्रशेखर, पैरालिंपिक स्वर्ण विजेता अवनि लेखरा, रजत पदक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया, दीप मलिक का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने अपने आपको सिद्ध किया है। ऐसी अनेक और भी जानी मानी हस्तियां हैं, जिन्होंने अपनी दिव्यांगता को व्यक्तित्व निर्माण में आड़े नहीं आने दिया।

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान भी आपके सहयोग और दिव्यांगों की निःशुल्क सेवा, चिकित्सा, शिक्षण–प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के क्षेत्र में पूरे समर्पण के साथ संलग्न है। विकलांगता दिवस पर हमें इस बात की शपथ लेनी है कि दिव्यांगों बंधु–बहनों के जीवन को सरल और सुचारू बनाने में हम अपनी सामर्थ्य के साथ अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

एक दिव्यांग के विचार

परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब है। पिताजी मजदूरी करके किसी तरह सात सदस्य के परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं। दो साल की उम्र में तेज बुखार हुआ और पालियो हो गया, जिससे पांव सिकुड़ गया। इस तरह मेरा चलना–फिरना बाधित हो गया और जीवन पशु की तरह हो गया।

ज्यों–ज्यों समझ आने लगी मैं अपनी विकलांगता के कष्ट से दुःखी रहने लगा। एक दो जगह दिखाया भी, परन्तु परिवार में कोई भी शिक्षित नहीं है, अतः इलाज की जानकारी या इलाज करवाने का विचार ही नहीं आया। गांव में ही देशी इलाज करने वाले एक–दो चिकित्सकों को दिखाया पर कोई उपचार नहीं हुआ।

गांव के निकट मेरे एक रिश्तेदार श्री राधेश्याम जी ने मुझे संस्थान के बारे में बताया जिन्हें भी पोलियो था और संस्थान में ऑपरेशन के बाद वे पूरी तरह ठीक हो गये। उनकी राय के अनुसार मैं यहां आया और जांच के बाद डॉ. सा. ने कहा कि ऑपरेशन के बाद मैं ठीक हो जाऊंगा और आराम से चल–फिर सकूंगा।

मैं यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। जीवन के प्रति नई उम्मीद जगी। पांव का ऑपरेशन हुआ। अब मैं कैलिपर्स की सहायता से सामान्य व्यक्ति की तरह चल–फिर सकता हूँ। संस्थान ने मुझ जैसे असहाय को नया जीवन दिया है। मैं संस्थान के सभी भाई–बहनों के प्रति बहुत आभारी हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी सेवा के बदले में भगवान उन्हें धन–वैभव और सुख–शान्ति दे।

राजश्री का जीवन हुआ आसान

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के निकटस्थ गांव नारियल खेड़ा निवासी राजश्री ठाकरे (21) का जन्म से ही दांया हाथ बिना पंजे के था। पिता दशरथ ठाकरे मजदूरी करके पांच सदस्यों के परिवार का पोषण कर रहे थे। सितम्बर 2019 में पिता का देहांत हो गया।

राजश्री ने एक कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। कृत्रिम पंजा अथवा हाथ लगाने के लिए भोपाल के एक बड़े अस्पताल से सम्पर्क भी किया लेकिन आर्थिक तंगी के चलते सम्भव नहीं हो पाया। राजश्री पार्ट टाइम नौकरी कर परिवार पोषण में मदद कर रही है।

भोपाल में 22 जनवरी 2021 को नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क कृत्रिम अंग शिविर में राजश्री ने भी पंजीयन करवाया। जहां संस्थान के ऑर्थोटिस्ट–प्रोस्थोटिस्ट ने इनके लिए पंजे सहित एक विशेष कृत्रिम हाथ तैयार किया। राजश्री इस हाथ से अब दैनन्दिन कार्य के साथ लिखने का काम भी आसानी से कर लेती है।

गुरुग्राम (हरियाणा) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान द्वारा गुरुग्राम (हरियाणा), सामुदायिक केन्द्र से. 14 इफको चौक, गुरुग्राम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्रा. लिमिटेड, द्वारा शिविर में 86 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 13, ट्राइसाईकिल 30, व्हीलचेयर 10, वैशाखी 05, 49 के लिये कैलीपर्स 10 तथा ऑपरेशन चयन 03 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुकान्त कुमार जी (मैनेजर मित्सुबशी इलेक्ट्रिक प्रा. लिमिटेड), अध्यक्षता श्री विजयप्रताप जी (मित्सुबशी इलेक्ट्रिक प्रा. लिमिटेड), विशिष्ट अतिथि श्री विनोद जी गुप्ता (समाजसेवी), श्रीमति कृष्णा जी अग्रवाल, श्रीमति रूमा जी विरल, श्रीमति शकुंतला जी, (समाज सेविका), श्री उतमचंद जी (टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्ढा (शिविर प्रभारी), श्री भवरसिंह राठौड़ आश्रम प्रभारी गुरुग्राम, श्री जतन जी भाटी आश्रम प्रभारी दिल्ली, श्री मुकेश त्रिपाठी सहायक, श्री मुन्ना जी (विडियोग्राफर), श्री प्रकाश जी डामोर रजिस्ट्रेशन ने भी सेवायें दीं।

श्री कैलाश जी मानव के प्रवचन अंश

उठो - जागो

रामचरित मानस में प्रसंग आता है कि भगवान जी जमुना जी की तीर पर उतरते हैं। प्रयागराज में पधारते हैं। त्रिवेणी में स्नान करते हैं। त्रिवेणी जी प्रयागराज का जब भी शुभ नाम आता है हृदय में बहुत प्रेम उमड़ता है।

देखो आज से साढ़े पाँच सौ साल पहले रामचरितमानस की रचना हमारे सुख के लिए हमारे गृहस्थ धर्म के अच्छे भाव के लिए, हमारा व्यवहार अच्छा हो जावे। चौखों रंग आ जावे। इसके लिए हमारे जीवन का आधार सुधर जाये। हम सोना बन जावे। इसके लिए गोस्वामी महाराज जी ने लिखा उस समय भी अक्षयवट की बात लिखी। वो ही अक्षयवट के दर्शन कुम्भ में करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

मैं आपको धन्य-धन्य मानता हूँ। बोलिये हनुमान जी महाराज की जय हो। चन्द्रशेखर आजाद एक जमाने में अल्वर्ट पार्क बोला जाता था। जब भारत गुलाम था। हमारी फूट की वजह से, हमारी ईर्ष्या, द्वेष से बड़ा मैं उससे भी बड़ा ये भी मेरे अधीन हो जावे। ऐसे झगड़ों में झंझट में छोटे-छोटे स्वार्थों में एक ईस्ट इण्ड़िया कम्पनी आ गयी। कलकत्ता में आ गयी प्रमीशन लेकर व्यापार करना चाहते हैं। व्यापार की प्रमीशन दे दी। एक समय ऐसा दुर्भाग्य का आ गया। जब भारत गुलाम बन गया। लेडिमार्ड वेन्टन और ऐलीजाबेद रानी लन्दन में रहकर हमारे पर राज करने लगी। लार्ड मैकाले ने कहा- इनकी भाषा, संस्कृति और वेशभूषा छीन ली गई। आज भी पेन्ट और शर्ट! कहाँ गयी धोती? क्यों नहीं धोती पहनते? भारतीय संस्कृति की वेशभूषा पहननी चाहिए। संस्कृत बोलनी चाहिए। देव भाषा हिन्दी बोलनी चाहिए। मैं जब भारत सरकार की सेवा में था। एक दिन हमारे हेड क्लर्क साहब आये। साहब चिट्टी आई, हिन्दी में पत्र लिखिये। मैंने कहा बहुत बढ़िया बात है हिन्दी में तो पत्र लिखना ही चाहिए। हिन्दी हमारी मातृ भाषा, राष्ट्र भाषा है। पहले साहब अंग्रेजी में करते थे। अरे अंग्रेजी वाली बात? कहाँ भूल गये? कहाँ खो गये? भटक गये? तभी मैं कहता हूँ मुझे कभी-कभी लगता है।

तिरंगा झुक नहीं पाये.....।
..... जिन्हें आजादी प्यारी है।।

चन्द्रशेखर आजाद को क्यों लगा था मेरा भारत आजाद होगा? और जब 201 नालायकों दुष्टों ने सैनिकों ने अल्बर्ट पार्क को घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद जी ने सोचा मैंने कहा मेरी लाश को इनके हाथ नहीं लगने दूंगा। धाँय-धाँय करके पाँच अंग्रेजों को मार डाला और छठी गोली उन क्रांति के सरदार ने, उन क्रांति के दूत ने, हमारे को आजाद कराने वाले चन्द्रशेखर आजाद ने अपनी कनपट्टी पर रख दी। क्या क्षण रहे होंगे? वो एक-दो क्षण कैसे रहे होंगे?

जब भगतसिंह जी जिनको प्रणाम करते थे। जब चन्द्रशेखर ने एक बार कहा था। हम आपको अपने दल में कैसे शामिल करें? यदि अंग्रेजों ने आपको पकड़ लिया। आपको बर्फ की सिल्लियों पर लेटायेंगे, आपको भूखा, प्यासा रखेंगे।

आपकी कोड़ों से पिटाई करेंगे। उस समय हमारे नाम पते बता सकते हो, उस समय जलती हुई मोमबत्ती पर भगतसिंह ने हाथ रख दिया था, खून निकल रहा था। मांस के लौथड़े नीचे पड़ रहे थे। ऐसे भगत कहाँ चले गये- आप? ऐसे चन्द्रशेखर आजाद, लेकिन उनको हम पहचान नहीं पाये।

अन्यथा आज ये दिव्यांग, दिव्यांग नहीं होते। ये दिव्यांग भी पूर्ण पैरों पर चल रहे होते। इनको डेढ़ साल की वेटिंग नहीं दी जाती। कहीं ना कहीं हमारे से भूल हो गयी। कहीं ना कहीं हमारे से चूक हो गयी। जिसका फल ये विकलांग, दिव्यांगों को भोगना पड़ा रहा है।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सोजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 7500 रू.

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा- कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चो के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करे उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

सुख और दुःख अनुभूतियों का खेल है। सच में न तो सुख है और न दुःख। किन्तु व्यक्ति का सारा जीवन दुःख से मुक्ति पाने और सुख की प्राप्ति के प्रयासों में ही पूरा हो जाता है।

सुख और दुःख वस्तुतः दोनों आभासी हैं। इनकी वास्तविकता कुछ भी नहीं है। हमारे मन के अनुरूप जो कार्य नहीं होता वह हमें दुःखी करता है और जो कार्य हमारे मन के अनुसार होता है उससे हमें सुख की अनुभूति होती है।

इसका अर्थ है कि सुख व दुःख केवल मन की दो स्थितियां हैं। लेकिन हम रातदिन अपने मन के अनुसार ही चलने के आदी हो रहे हैं। यह जाने हुए भी कि हमें मंजिल तक पहुँचने में मन ही बाधक या साधक होता है पर हम मन का नियंत्रण सही ढंग से कर नहीं पाते।

प्राचीन काल की शिक्षा, सत्संग, उपदेश, आचरण सभी का सार था मन पर नियंत्रण। मन को घोड़ों की संज्ञा देकर उस पर लगाम लगाने की हर चिंतक व प्रवर्तक ने सलाह दी है, पर उसे आचरण में हमें ही लाना होगा तब हम सुख के बजाय आनंद की खोज में लग सकेंगे।

कुछ काव्यमय

सुख दुःख जीवन के द्वन्द्व हैं,
ये मन की अनुभूतियां हैं।
इस द्वन्द्व से उबरने हेतु
ऋषि-मुनियों ने
सृजित की श्रुतियां हैं।
मन को जीतें तो जीत
हमारी ही होगी।
वरना तो हम
बनके रह जायेंगे भोगी।

- वरदीचन्द राव

सेवा की कहानी : श्री कैलाश मानव की जुबानी

मेरा जन्म 2 जनवरी 1947 को उदयपुर के छोटे से शहर भींडर में हुआ। पिता मदन लाल जी अग्रवाल तथा माता सोहनी देवी जी भक्तिमय जीवन जीते थे। पिता बर्तन की छोटी सी दुकान चलाते थे जिससे जरूरत पूर्ति जितनी आया होती थी। बावजूद इसके वे गरीबों और जरूरतमंदो की मदद करने में सबसे आगे रहते थे। माता–पिता के कारण ही मुझे बचपन से साधु–संतों का सान्निध्य मिला। इसी दौर में महान व्यक्तियों के जीवन पर आधारित पुस्तकें पढ़ी। यहीं कारण थे जिन्होंने मेरे मन में मानव के प्रति करुणा–दया और सेवा का बीज बोया। पढ़ाई में तो अच्छा था ही, सो सिरोही पोस्ट ऑफिस में बाबू की नौकरी लग गई।

1976 की बात है तब सिरोही जिले के पिंडवाड़ा कस्बे में एक बस दुर्घटनाग्रस्त हुई थी। हादसे में मेरे इष्ट मित्र के घायल होने की सूचना मिली तो मौके पर पहुंचा। देखा स्वास्थ्य केन्द्र में इलाज के अभाव में 40 घायल तड़प रहे थे। 7 लोगों की मौत हो चुकी थी।

किसी तरह घायलों को 7 सिरोही अस्पताल पहुंचाया लेकिन वहां भी पर्याप्त सुविधा नहीं थी। किसी को ब्लड की जरूरत थी तो किसी के पास इलाज के पैसे नहीं थे। नौकरी से छुट्टी लेकर मैंने घायलों की सेवा की। रोजाना अस्पताल जाकर देखता था कि इन्हें ठीक से उपचार मिल रहा है या नहीं।

एक दिन अस्पताल में मेरी मुलाकात किशन भील से हुई उसने परोसे गए भोजन का कुछ हिस्सा अलग रखा था। पूछने पर बोला कि मैं भूखा हूँ लेकिन मेरा बेटा और भाई भी साथ है। हमारे पास पैसा नहीं है। इसलिए यह भोजन उनके लिए बचाया है। तभी मेरे मन में प्रश्न उठा की ऐसे बहुत सारे लोग होंगे, इनकी मदद कैसे की जाए? फिर मैने अपने रिश्तेदारों और परिचितों और को नारायण सेवा लिखे हुए कुछ कंटेनर दिये और आग्रह किया कि वे इसमें रोजाना थोड़ा–थोड़ा आटा डालें। इस तरह जमा हुए आटे से मैं और पत्नी तड़के चार बजे उठकर चपातियां बनाते थे। फिर साइकिल पर एम. बी. अस्पताल के मरीजों व अन्य जगह जरूरत मंदों को भोजन करवाने जाता था। बस यही से शुरू हुआ "नारायण सेवा संस्थान" का सफर।

एक बार उदयुपर जिले में अकाल पड़ा तो इससे नारायण संस्थान के नाम पर मैंने सम्पन्न लोगों से कपड़े दवाइयाँ, और भोजन सामग्री देने को कहा। यह सामग्री ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों लगे शिविरों में अकाल प्रभावितों को बांटने जाता था। एक बार की बात है शिविरों में भोजन परसोते समय पोलियों ग्रस्त एक व्यक्ति लगभग रेंगता हुआ आया और मुझसे मदद मांगी। कुछ इंतजाम करके मैं उसे ईलाज के लिए मुम्बई ले गया। तभी मन में एक भाव और जागा कि अब दिव्यांगों की भी हर सम्भव मदद करनी चाहिए। इसके बाद पोलियो ग्रस्त कई बच्चों का मैंने मुम्बई में इलाज करवाया चूंकि मुम्बई में इलाज करवाना बहुत ही मंहगा पडता था। इसलिए उदयपुर में अस्पताल का सपना देखा। 1997 में मुम्बई के कारोबारी चैनराज लोढ़ा के वित्तिय सहयोग से 151 बिस्तर वाले " मानव मन्दिर " अस्पताल की नींव रखी यहां पोलियो पीड़ितों का निःशुल्क ऑपरेशन व इलाज होने लगा।

मैंने एक ही लक्ष्य रखा कि दिव्यांगों को आत्मनिर्भर बनाना है। कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आर. केअग्रवाल साहब और बिसलपुर के राजमल जी जैन साहब ने इस सेवा में बहुत योगदान दिया। 1985 से 2019 तक चार लाख से अधिक दिव्यांगों को मुत ट्राइसाइकल, इतने ही लोगों को व्हीलचेयर दे चुके हूँ।

देश भर से पोलियों करेक्टिव सर्जरी व बेहतर इलाज के लिए आने वाले दिव्यांगों की सेवा के लिए 1100 बेड का अस्पताल है और लोगों को कृत्रिम हाथ पैर लगवाये जा चुके हैं। फिजियोथेरेपी, कैलिपर, कृत्रिम श्रवण यंत्र, दृष्टिहीनों के लिए छड़ी, और कृत्रिम अंग निःशुल्क दिये जाते है। दिव्यांगों बेसहारा मरीजों का ऑपरेशन दवाई, मरीजों के साथ आने वालों का रहना, पौष्टिक भोजन सबकुछ मुत है। यहां पर 125 डॉक्टर और नर्सिंग स्टॉफ द्वारा प्रतिदिन दसियों सर्जरी की जाती है।

दिव्यांग मरीजों को मोबाईल रिपेयरिंग, कम्प्युटर, सिलाई प्रशिक्षण भी हम देते हैं। ताकि वे अपने आजीविका अर्जित कर सकें। नारायण संस्थान अभी तक 2400 दिव्यांगों और निर्धन जोड़ों की शादी करवा चुका है। मैने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरी मानव सेवा की पहल 34 वर्षो में देश भर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांगों को नया जीवन देगी।

प्रभु की कृपा से अब तक 3.70 करोड़ लोगों को भोजन करवाने का अवसर मिला है। 1990 में आदिवासी और ग्रामीण इलाकों के बेघर बच्चों को गुणवत्तापर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक अनाथालय भी बनाया गया है। दिव्यांगों की सेवा करने वाले नारायण सेवा संस्थान की देश में 480 तथा विदेश में 86 शाखाएं है।

इसकी गिनती आज दुनिया भर के चोटी के गैर लाभकारी संस्थान में होती है। यूं तो मुझे कई पुरस्कार मिले लेकिन राष्ट्रपति डॉक्टर श्री अब्दुल कलाम जी ने व्यक्तिगत क्षमता में उत्कृष्ट सेवा के लिए वर्ष 2003 में राष्ट्रीय पुरस्कार दिया। वहीं पद्श्री पुरस्कार से 2008 में सम्मानित किया गया।

दस वर्ष पूर्व चैन्नई के अस्पताल में आंखों का ऑपरेशन करवाया था, इंफेक्शन में मेरी आँखों की रोशनी पूरी तरह चली गई। इसके बावजूद भी रोगियों से उनके इलाज खाने पीने व रहने के बारे में जानकारियां जब तक पूछ लेता हूँ, मेरा मन नहीं मानता।

आपकी संस्थान द्वारा नर सेवा : नारायण सेवा

गोविन्दपुरा गाँव, जिला भिवानी हरियाणा से आये श्री सुरेश कुमार पिता श्री राम किशन, उम्र 25 वर्ष जन्म से ही पोलियो रूपी अभिशाप झेल रहे हैं। श्री सुरेश कुमार ने कक्षा चार तक अध्ययन किया है। पिता श्री राम किशन मध्यम आय वर्गीय कृषक है, जो बताते हैं कि सेवा सौभाग्य के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान रूपी सेवा मंदिर की जानकारी मिली। आशा की किरण लिये संस्थान में आये और संस्थान के चिकित्सकों द्वारा जांच कर ऑपरेशन किया गया। वे बताते हैं कि मेरा यहाँ कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। यह संस्थान पोलियो रूपी दानव को मारकर पुण्य का कार्य कर रही है।

राजकोट, गुजरात निवासी श्री प्रतीक सोनी पिता श्री सतीश सोनी, उम्र 15 साल जो जन्म से ही मानसिक पक्षाघात के शिकार है। श्री प्रतीक सोनी ने कक्षा सात तक अध्ययन किया है। श्री सतीश सोनी का अपना सोने का व्यवसाय है वे बताते है कि– बम्बई, हैदराबाद जैसे कई महानगरों के चिकित्सालयों में इलाज कराया, परन्तु कोई सफलता नहीं मिल सकी। टी.वी. पर संस्थान की सेवाओं के बारे में जानकर उदयपुर आये और उसी दिन ऑपरेशन कर दिया गया। यहाँ के सेवा कार्य देखकर हर रोगी को परमानन्द मिल जाता है। संस्थान में सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है।

कोविड के बाद की बात

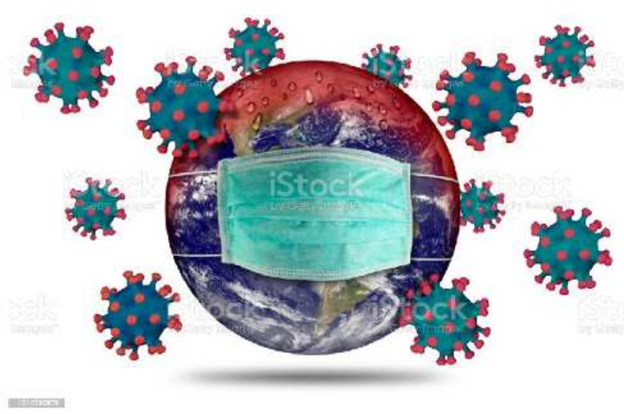

1 हजार में से एक मरीज में गॉल ब्लैडर में गेंगरीन के मामले सामने आते हैं।

जाने क्या है गैंगरीन

कोरोना वायरस जब रक्तधमनियों मे पहुंचता है तो वहां थक्का बनने लगता है। ऐसे में रक्त बनने लगता है। ऐसे में रक्त के हृदय की नसों में जमने से हार्ट अटैक, फेफड़ो में जमने से सांस लेने में दिक्कत व जोड़ो में जमने से दर्द होता है। जब वायरस कोशिकाओं तक पहुंचकर रक्त का धक्का जमाता है तो उस अंग को रक्त की आपूर्ती नहीं होती व अंग सड़ने लगता है। इसको गैंग्रीन कहते है।

कब होती है आशंका

क्रॉनिक रोगी, डायबिटीज या मोटापा की शिकायत हो उनके गॉल ब्लैडर में गैंगरीन की आशंका बढ़ जाती है। इस स्थिति में उन्हें प्रमुख लक्षणों पर नजर रखनी चाहिए।

सर्जरी कारगर तरीका

लक्षणों के आधार पर सोनोग्राफी करते है और बायोप्सी जांच से गैंगरीन की पुष्टि होती है। अधिकांश मामलों में सर्जरी करते है। मरीज को एंटीबायोटिक दवाएं देते है। कोविड वैक्सीन जरूर लगवाएं।

लक्षणों पर ध्यान दें

पोस्ट कोविड या जिन्हें बार–बार पथरी की शिकायत रहती है, उन्हें पेट के ऊपरी भाग में तेज दर्द, बुखार आना और कभी–कभी उल्टी होने जैसे लक्षणों पर ध्यान देना चाहिए।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
बैसाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर – 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023